दीपावली से पहले शुद्धि और सौंदर्य का पर्व

रूपचौदसः तन की स्वच्छता से मन के उजास तक...

नरक चतुर्दशी का पर्व, अभ्यंग स्नान की परंपरा और अंधकार पर प्रकाश की विजय का संदेश

दीपावली का उत्सव केवल एक दिन का आयोजन नहीं, बल्कि अनेक धार्मिक मान्यताओं, लोकपरंपराओं और सांस्कृतिक रंगों से सजा पर्वक्रम है। इसी पर्वक्रम में रूपचौदस का विशेष स्थान है। इसे नरक चतुर्दशी, रूप चतुर्दशी और छोटी दिवाली के नाम से भी जाना जाता है। कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाया जाने वाला यह पर्व दीपावली के उल्लास से ठीक पहले आता है। कहीं इस दिन प्रातःकाल अभ्यंग स्नान की परंपरा निभाई जाती है, कहीं घरों में दीप प्रज्ज्वलित किए जाते हैं, तो कहीं बुराई पर अच्छाई की विजय के प्रतीक के रूप में नरकासुर वध की कथा सुनाई जाती है। अलग-अलग क्षेत्रों में इसके अनुष्ठानों का स्वरूप भले ही अलग हो, लेकिन इनके केंद्र में शुद्धि, मंगल और अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की भावना दिखाई देती है।





धार्मिक कथा

नरकासुर वध की पौराणिक कथा ...

नरक चतुर्दशी की धार्मिक कथा इस पर्व के महत्व को एक दूसरा आयाम देती है। पौराणिक परंपरा के अनुसार नरकासुर नामक असुर ने अत्याचार करके अनेक लोगों को पीड़ित किया था। श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कंध में नरकासुर, जिसे भौमासुर भी कहा गया है, के वध का वर्णन मिलता है। भगवान श्रीकृष्ण ने सत्यभामा के साथ नरकासुर का अंत किया और उसके बंदी बनाए गए लोगों को मुक्त कराया। इस कथा को अन्याय, अत्याचार और अहंकार के अंत के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। नरक चतुर्दशी पर इस प्रसंग का स्मरण इसी विश्वास को व्यक्त करता है कि शक्ति का उद्देश्य दूसरों को भयभीत करना नहीं, बल्कि अन्याय से मुक्ति दिलाना है।

श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कंध में नरकासुर, जिसे भौमासुर भी कहा गया है, के वध का वर्णन मिलता है। भगवान श्रीकृष्ण ने सत्यभामा के साथ नरकासुर का अंत किया और उसके बंदी बनाए गए लोगों को मुक्त कराया।

गोवा में नरकासुर के पुतलों का दहन

देश के अलग-अलग हिस्सों में नरक चतुर्दशी का स्वरूप स्थानीय संस्कृति के अनुरूप दिखाई देता है। गोवा में यह पर्व विशेष रूप से आकर्षक सामुदायिक आयोजन का रूप लेता है। यहां नरकासुर के विशाल पुतले बनाए जाते हैं, जिन्हें रात में प्रदर्शित करने के बाद प्रातःकाल जलाया जाता है। इन पुतलों को बनाने में स्थानीय युवाओं और समुदायों की भागीदारी रहती है। पुतलों का दहन नरकासुर के अंत और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है।



गोवा की यह परंपरा दिखाती है कि धार्मिक कथाएं किस प्रकार लोककला, सामुदायिक भागीदारी और उत्सव के साथ जुड़कर विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान बनाती हैं।

रूप निखारने की सदियों पुरानी परंपरा



रूपचौदस नाम अपने आप में इस पर्व की एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान प्रस्तुत करता है। लोकमान्यता में इस दिन शरीर की स्वच्छता, सौंदर्य और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की परंपरा रही है। प्रातःकाल तेल लगाकर स्नान करना और उबटन का प्रयोग करना इसी परंपरा का हिस्सा है। पुराने समय में जब आधुनिक प्रसाधन और व्यक्तिगत स्वच्छता के साधन सहज उपलब्ध नहीं थे, तब प्राकृतिक पदार्थों से शरीर की देखभाल करना जीवनचर्या का सामान्य हिस्सा था। हल्दी, बेसन, तेल और अन्य पारंपरिक सामग्रियों से तैयार उबटन का उपयोग भी इसी व्यापक घरेलू परंपरा से जुड़ा रहा है। समय के साथ इस दिन की स्नान और सौंदर्य संबंधी परंपराओं को धार्मिक तथा सांस्कृतिक अर्थ प्राप्त हुए। इन रीति-रिवाजों का स्वरूप परिवारों और क्षेत्रों के अनुसार अलग-अलग हो सकता है।

अभ्यंग स्नानः शरीर और मन की शुद्धि

रूपचौदस पर प्रातःकाल अभ्यंग स्नान की परंपरा का संबंध भी धार्मिक मान्यताओं से जोड़ा जाता है। मान्यता है कि नरकासुर के वध के बाद भगवान श्रीकृष्ण ने तेल से स्नान किया था। इसी प्रसंग के आधार पर सूर्योदय से पहले तेल लगाकर स्नान करने की परंपरा प्रचलित हुई। इस स्नान को केवल शरीर की सफाई तक सीमित नहीं माना जाता, बल्कि इसे पुराने विकारों और नकारात्मकता को पीछे छोड़कर नए उत्साह के साथ जीवन की शुरुआत करने के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है। इस परंपरा से जुड़ी कथा को धार्मिक मान्यता के रूप में ही समझना चाहिए।



दक्षिण भारत में सुबह से शुरू होता है दीपोत्सव

महाराष्ट्र और दक्षिण भारत के अनेक हिस्सों में नरक चतुर्दशी का प्रमुख आकर्षण सुबह का अभ्यंग स्नान है। परिवारों में लोग प्रातःकाल स्नान करके नए या स्वच्छ वस्त्र धारण करते हैं और पूजा-अर्चना के साथ दीपावली के उत्सव की शुरुआत करते हैं। महाराष्ट्र में इस दिन को अभ्यंग स्नान की परंपरा से विशेष रूप से पहचाना जाता है। तमिलनाडु और कर्नाटक सहित दक्षिण भारत के कई क्षेत्रों में दीपावली का मुख्य उत्साह इसी सुबह दिखाई देता है। घरों में पकवान बनाए जाते हैं, परिजन एक-दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं और दिन की शुरुआत पारंपरिक अनुष्ठानों से होती है। इन प्रथाओं में क्षेत्रीय विविधता है, इसलिए पूरे दक्षिण भारत की परंपराओं को एक जैसा मानना उचित नहीं होगा।



बाहरी सुंदरता से आगे है रूपचौदस का संदेश



रूपचौदस की लोकप्रियता का एक कारण इसका सौंदर्य और आत्म-देखभाल से जुड़ा स्वरूप भी है। आधुनिक समय में इस दिन लोग त्वचा की देखभाल, स्वच्छता और सजने-संवरने पर विशेष ध्यान देते हैं। लेकिन पर्व का अर्थ केवल बाहरी रूप निखारने तक सीमित कर देना इसकी व्यापक भावना को छोटा कर देगा। स्वच्छता का संबंध घर, परिवेश और विचारों से भी है। जैसे दीपावली से पहले घरों की सफाई की जाती है, वैसे ही यह अवसर अपने व्यवहार, आदतों और संबंधों पर विचार करने की प्रेरणा भी दे सकता है। ईर्ष्या, क्रोध, अहंकार और कटुता जैसे भाव मन के अंधकार हैं, जिन्हें दूर करने का प्रयास किसी भी बाहरी सजावट से अधिक महत्वपूर्ण है।

काली चौदस और भूत चतुर्दशी की क्षेत्रीय परंपराएं

गुजरात में काली चौदस की परंपरा भी इसी समय के आसपास आती है। इसे नरक चतुर्दशी के साथ पूरी तरह समान मान लेना सही नहीं है, क्योंकि तिथि-निर्णय और स्थानीय धार्मिक परंपराओं के कारण इसके अनुष्ठान अलग हो सकते हैं। कुछ स्थानों पर इसे नकारात्मक शक्तियों से रक्षा और संकटों से मुक्ति की कामना से जोड़ा जाता है। इसी प्रकार बंगाल में भूत चतुर्दशी की विशिष्ट लोकपरंपरा मिलती है, जिसमें पूर्वजों के स्मरण और दीप जलाने से जुड़े रीति-रिवाज प्रचलित हैं। इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि एक ही पर्वकाल में विभिन्न क्षेत्रों ने अपनी ऐतिहासिक स्मृतियों और धार्मिक विश्वासों के अनुरूप अलग-अलग परंपराएं विकसित की हैं।

मन का अंधकार दूर हो, तभी सार्थक होगा उत्सव

आज जब सौंदर्य की परिभाषा अक्सर बाहरी रूप, महंगे उत्पादों और दिखावे से जोड़ दी जाती है, तब रूपचौदस का सांस्कृतिक संदेश नए अर्थ ग्रहण कर सकता है। इस दिन को स्वयं की देखभाल के साथ-साथ दूसरों के प्रति संवेदनशील होने का अवसर बनाया जा सकता है। स्वच्छता और स्वास्थ्य का ध्यान रखना उपयोगी है, लेकिन किसी खास रंग, चेहरे या शारीरिक बनावट को सुंदरता का एकमात्र मानक मानना उचित नहीं। वास्तविक सौंदर्य में आत्मविश्वास, सरलता, संवेदना और व्यवहार की गरिमा भी शामिल है।

रूपचौदस दीपावली के स्वागत की तैयारी का पर्व है। इसकी परंपराएं हमें शरीर और घर की स्वच्छता, परिवार के साथ उत्सव, अन्याय के विरुद्ध खड़े होने और जीवन में प्रकाश का महत्व समझाती हैं। नरकासुर वध की कथा अत्याचार के अंत की याद दिलाती है, अभ्यंग स्नान आत्म-देखभाल की परंपरा को जीवित रखता है और दीपदान अंधकार के बीच आशा का संदेश देता है। इन सबके बीच इस पर्व का सबसे सार्थक अर्थ यही है कि बाहरी उजाले के साथ भीतर भी सकारात्मकता का दीप जलाया जाए। जब मन में करुणा, व्यवहार में विनम्रता और जीवन में स्वच्छता का भाव हो, तभी दीपावली की रोशनी अपने वास्तविक अर्थ में जीवन को आलोकित करती है।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)